नवम्बर 2020 | मूल्य :20/-

डाक पंजीयन क्र.: M.P. / I.D.C. / 892 / 2018-20
पत्र पंजीयक क्र.: M.P. 15059

# संस्कार सागर

वर्ष :24 | अंक : 255

संस्कार सागर पढ़िये ❊ संस्कार गढ़िये ❊ संस्कार सागर के सदस्य बनिए

# नवागढ़ मूर्तियों का कला वैशिष्ट्य

❊ शोधछात्रा : श्रीमती अर्पिता रंजन, आष्टा भोजपुर ❊

जैन धर्म प्राकृतिक धर्म है, इसका आदिअंत नहीं है, इसका सिद्धांत है वत्थु सहावो धम्मो वस्तु का स्वभाव ही धर्म है, जैसे अग्नि में उष्णता, गन्ने की मिठास, नीम का कड़वापन उनका स्वाभाव है, यही उसका धर्म है जो हमेशा रहेगा। उसी तरह जीव आत्मा का स्वभाज्ञान एवं चेतना है।

जैन सिद्धान्तानुसार प्रत्येक आत्मा स्वतंत्र है, पेड़-पौधे से चीटी, छिपकली, बन्दर, मनुष्य सभी जीव सत्कर्म करके आत्मोन्नति करते हुए संसार के जन्म-मरण एवं दुखों से छुटकारा पा सकते हैं।

**विलक्षण धर्म-** जैन धर्म में भक्ति के लिये मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा करके उनकी स्थापना की जाती है परन्तु उस मूर्ति की पूजा नहीं की जाती है, मूर्ति के माध्यम से उस मूर्ति में जिनके गुणों का गुणारोपण किया गया है उनकी पूजा की जाती है अर्थात् मूर्ति नहीं मूर्तिमान की पूजा की जाती है। जैसे मूर्ति में ऋषभदेव के गुणों की स्थापना की जाती है उससे ऋषभ देव की आराधना की जायेगी तथा जिसमें महावीर के गुणों की स्थापना की गई है, उससे महावीर की आराधना की जायेगी।

जैनधर्म में भगवान (केवली) अनंत हो सकते हैं परन्तु तीर्थंकर चौबीस ही होते हैं। काल क्रमानुसार प्रत्येक अवसर्पिणी एवं उत्सर्पिणी में 24-24 ही तीर्थंकर होते हैं। वर्तमान काल में तीर्थंकरों का सदभाव न होने के कारण उनकी प्रतिकृति (मूर्ति) में उनके गुणों का आरोपण करके पूजा की जाती है।

**कला वैशिष्ट्य-** तीर्थंकरों के जन्मस्थान, शरीर, दीक्षा स्थान, आयु एवं निर्वाण में भिन्नता होते हुए भी उनके गुणों में भिन्नता नहीं होती सभी में 1008 शुभलक्षण एवं उन पर आधारित नाम एक समान होते हैं। उसका वैशिष्ट्य प्रागैतिहासिक अतिशय क्षेत्र नवागढ़ में संग्रहीत मूर्तियों में मिलता है। मुझे कई जैन तीर्थों पर अन्वेषण का सौभाग्य मिला, पर जो वैशिष्ट्य नवागढ़ में मिला अन्य कही नहीं मिला।

जब क्षेत्र निर्देशक ब्र. जयकुमार निशांत जी पहली बार लाल किला स्थित कार्यालय में आये और अपने डॉ संजय मंजुल डायरेक्टर एवं इंजी पी.सी. जैन को नवागढ़ के फोल्डर एवं पुरा सम्पदा के चित्र दिखायें, तो मेरी जिज्ञासा बढ़ी। श्री निशांत जी के जाने के बाद मैंने श्री पी.सी.जैन से इस क्षेत्र की जानकारी प्राप्त की तो मुझे लगा यहां का भ्रमण अवश्य करना चाहिए।

मैं अपनी बहिन के साथ नवागढ़ पहुंची। वहाँ कोई मूर्तियों के साथ पुरा पाषाण कालीन 2 लाख 5 लाख वर्ष प्राचीन औजार, हजारों वर्ष प्राचीन संत साधना शैलाश्रय, पैट्रोलिक कपमार्क, शैलचित्र, शैलोत्कीर्ण मुद्रा, धातु काष्ट-उपकरण प्राचीन राजाओं एवं रानियों के मुकुट सहित शीर्ष अत्यंत विलक्षण हैं।

मैंने नवागढ़ में प्राप्त अभिलेखें के आधार पर शोध प्रबंध का कार्य श्रद्धेय डॉ. प्रकाशराम के निर्देशन में ब्र. निशांत जी एवं सरिता जी दिल्ली के सहयोग से आरंभ किया है।

**मूर्ति वैशिष्ट्य -** पार्श्वनाथ भगवान की पद्मासन विशाल प्रतिमा लोग कुंए पर पाट के रूप में उपयोग करते थे, जिसके अंगोपांग तोड़कर जिसे पं. नीरज जी सतना संग्रहालय में लेकर आये थे।

अन्य मूर्ति जो कुए पर पड़ी श्री ग्रामीण उस पर लोहे के औजारों की धार बनाते थे तथा

महिलायें उस पर जल भरने के घड़े रखती थी। वर्षों वर्ष पश्चात् उस पाषाण को जब देखा गया तो उसमें तो उसमें सातवीं शदी की प्रतिहार कालीन ऋषभदेव की मूर्ति उत्कीर्ण थी।

भगवान पार्श्वनाथ की मूर्ति में जहाँ सर्प कुण्डली का आसन है ऊपर की ओर दो चंबरधारी हैं तथा नीचे की ओर धरणेन्द्र-पद्मावती भी चंवर धारण किये हैं। इस प्रकार एक प्रतिमा में 4 चंवरधारी अन्यमूर्ति में देखने को नही मिले।

डॉ. मारूतिनंदन तिवारी एमिटेट्स प्रोफेसर काशी हिन्दू विश्व विद्यालय वाराणसी के अनुसार इस पार्श्वनाथ बिम्ब में नीचे कुवेर यक्ष एवं अम्बिका यक्षी अंकित है जो नेमिनाथ के यक्ष-यक्षी है।

तीर्थंकर गुणों में समानता को मूर्ति में कैसे दर्शाया जाये तो शिलाकार ने इसमें धरणेन्द्र पद्मावती के साथ कुवेर एवं अम्बिका का अंकनकर के अद्वैतवाद को दर्शाने का प्रयास किया है।

जैन मूर्ति शिल्प वैशिष्ट्य- जैन प्रतिमा विज्ञान के अनुसार प्रतिमा के सभी अंगोपांगों का माप निश्चित है, उनमें हीनाधिकता नहीं होती है अन्यथा प्रतिमा दोषपूर्ण मानी जाती है। जैन मूर्ति शिल्प की विशेषता है कि उसका कोई भी अंग यथा शीर्ष, वक्षस्थल, स्कंध, हस्त, अंगुली, उदर एवं कटि भाग, जंघा, घुटना, चरण, परिकर या पादपीठ मिले तो उससे जैन मूर्ति का अस्तित्व सिद्ध होता है तथा उससे मूर्ति के आकार का ज्ञात भी किया जा सकता है।

नवागढ़ प्रवास में मैंने पाया कि शिल्पकार ने अपनी कल्पना शक्ति से दिगम्बरत्व में भी कला वैशिष्ट्य एवं कौशल का प्रदर्शन किया है। मूर्ति परिकर सज्जा, गजरात, मृदंगधारी, त्रिछत्र, माल्याधर, चंवरधारी, यक्ष, यक्षी, समर्पित श्रावक, पादपीठ आसन, लांघन, श्रीवत्स, केशविन्यास, लम्बकर्ण, नाभि सौन्दर्य मिलकर वीतरागता को उभारते हैं। उसका सौन्दर्य, मनोज्ञता, एवं वैराग्य का चुम्बकीय आकर्षण होता है। नवागढ़ में इसके कई मूर्ति शिल्प संगृहीत हैं।

**मूलनायक का वैशिष्ट्य** - मूलनायक आदिनाथ स्वामी का गम्भीर, नैत्राकृति, नसिका, ओस्ठ, लम्बकर्ण, वक्षस्थल, श्रीवत्स के साथ मानवाकार उदरावलि, पेडू, सुड़ोल जंघा, अत्यंत विलक्षण है जिसका शिल्प सभी को आकर्षित करता है।

हथेली और अंगुलियों का वैशिष्ट्य है कि मध्यमा हथेली की ओर है शेष तीन अंगुलियों अंगुस्ठ से भिन्न है। इस मुद्रा का वैशिष्ट्य अन्वेषण का विषय है। डॉ. वृषभ प्रसाद लखनऊ, डॉ. यशवंत मलैया कॉलोरोडो अमेरिका ने भी इसको इंगित किया है।

**अन्य प्रतिमाओं का वैशिष्ट्य** - मानस्तंभ में प्रायः चारों और तीर्थंकर बिम्ब होते हैं परन्तु यहाँ प्राप्त चारों मानस्तंभों में तीन और तीर्थंकर एवं एक ओर उपाध्याय बिम्ब अंकित हैं।

एक खण्डितर उपाध्याय बिम्ब में पादपीठ में चिन्ह के रूप में मयूर पिच्छी का अंकन है जो अन्य कहीं दृष्टव्य नहीं है।

अन्य खण्डित उपाध्याय बिम्ब में लम्ब शास्त्र को अंगुलियों की विशेष मुद्रा में उत्कीर्ण किया गया है।

राजकुमार अकलंक एवं निकलंक एक ही पाषाण फलक में उत्कीर्ण है, अग्रज के हाथ में लम्ब शास्त्र एवं कलम है। नवागढ़ में संगृहीत 9 उपाध्याय बिम्ब यहाँ गुरुकुल परम्परा के साक्ष्य हैं।

यहाँ प्राप्त धातु एवं काष्ठ उपकरण, विविधता लिये हैं मैं चाहती हूँ देश के विख्यात प्रतिमा विज्ञानी, पुरातत्त्वविद्, एवं इतिहासविद प्रागैतिहासिक नवागढ़ क्षेत्र में आकर पुरारहस्यों का अन्वेषण करके भारतीय संस्कृति के विशिष्ट आयामों को उद्घाटित करें। जो हमारी नवोदित पीढ़ी को विरासत के रूप में प्राप्त हो।